राजस्थान के समकालीन चित्रकार

1. रामगोपाल विजयवर्गीय
2. भवानीचरण गुई
3. गोवर्धनलाल जोशी (बाबा)
4. देवकीनन्दन शर्मा
5. कृपाल सिंह शेखावत
6. परमानन्द चोयल
7. द्वारका प्रसाद शर्मा
8. राम जैसवाल
9. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय
10. किरण मुर्डिया

रामगोपाल विजयवर्गीय

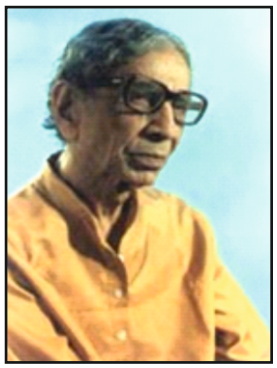

रामगोपाल विजयवर्गीय का जन्म सवाईमाधोपुर जिले के बालेर गाँव में 1905 में हुआ था। इन्होंने 1924 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट जयपुर से कला की शिक्षा ग्रहण की शैलेन्द्र नाथ उनके गुरु थे तथा वह राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के प्राचार्य भी थे। श्री रामगोपाल विजयवर्गीय उनके प्रिय शिष्यों में से एक थे। वह कला के प्रभावी अध्ययन के लिये बाद में कोलकाता गये। इनके चित्रों की प्रथम प्रदर्शनी 1928 में शिल्प सोसायटी और ललित कला अकादमी कोलकाता में लगी। इसके बाद भारत के अनेक शहरों में इन्होंने अपने चित्रों को प्रदर्शित किया। इनके चित्र भारतीय किवदतियों और साहित्य कृतियों से प्रेरित है। वे 1945 से राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्राचार्य पद पर रहे तथा 1958 से 60 तक राजस्थान ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष रहे। 4 मई 2003 को निधन से कला जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है।

प्रमुख चित्र कृतियाँ – मेघदूत चित्रावली, बिहारी चित्रावली, राग–रागिनी, अभिज्ञान शाकुन्तल, रघुवंशम्, गीतगोविन्द, उमर खैय्याम तथा राजस्थानी पेन्टिंग रहे हैं।

पुरस्कार – श्री रामगोपाल विजयवर्गीय के 1934 महाराजा पटियाला। 1958 में राजस्थान ललित कला अकादमी पुरस्कार, 1984 में भारत सरकार द्वारा पद्म श्री , 1988 में केन्द्रिय ललित कला अकादमी नई दिल्ली

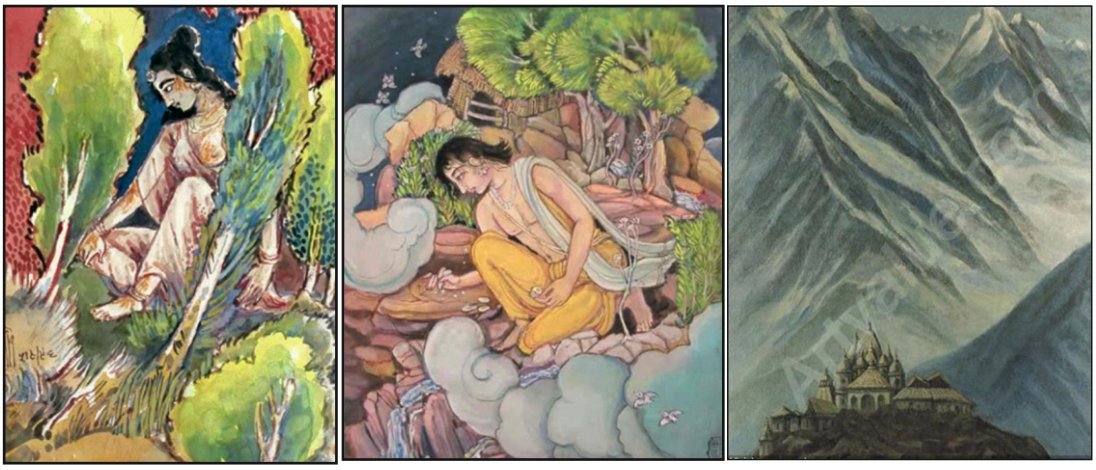

द्वारा पुरस्कृत किया गया। नई दिल्ली में 63वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी के अवसर पर इन्हें भारत रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। 1998 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में साहित्य वाचस्पति के सम्मान से सम्मानित किया गया।

चित्रों की विशेषता – इनके चित्रों में तीखे नाक नक्श, लहराते अंग–प्रत्यंग, पारदर्शी वस्त्रों में कोमल शारीरिक सौन्दर्य, लचीली रेखांकन तथा अद्वितीय धूमिल रंग योजना से इनके चित्र श्रेष्ठता की पराकाष्ठा लिये हैं।

बी.सी. गुई

बी.सी. गुई का जन्म 1910 में वाराणसी शहर में एक बंगाली परिवार में हुआ। इनका परिवार आध्यात्मिक और भारतीय सभ्यता व संस्कृति में गहरा विश्वास रखता था अतः प्रारम्भ से ही उन्हें भारत के सांस्कृतिक परिवेश तथा तीज त्यौहारों से लगाव रहा इसका कारण उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि थी। आपने 1939 में लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट से कला की शिक्षा प्राप्त की तथा कुछ अन्तराल बाद स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट, लंदन में आपने कला का गहन अध्ययन किया वहीं से आपने ऐचिंग विधा एवं व्यक्ति चित्रण में महारत हासिल की। आपने मेयो कॉलेज में वर्षों तक कलाअध्यापन का कार्य किया तथा वहीं से ही सेवा निवृत हुये। प्रारम्भ में बी.सी. गुई ने बंगाली शैली जिसे वाश तकनीक कहते हैं उस विद्या में चित्रण कार्य किया।

प्रमुख चित्र – बी.सी. गुई के प्रमुख चित्रों में रामलीला, शिव–ताण्डव, कालिदास, शकुन्तला, राधाकृष्ण, सरस्वती, कालिया मर्दन आदि रहे हैं।

पुरस्कार – राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, अकेडमी फाइन आर्ट कलकत्ता, मैसूर कला प्रदर्शन, हैदराबाद आर्ट सोसायटी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

गोवर्धन लाल जोशी (बाबा)

गोवर्धन लाल जोशी का जन्म उदयपुर के पास कांकरोली ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री भगवानलाल जोशी कांकरोली के प्रसिद्ध द्वारिकाधीश मन्दिर के सेवक थे तथा वे मन्दिर में चित्रण कार्य हेतु सामग्री की व्यवस्था करते थे। वहीं उनके पिता ने गोवर्धन लाल जोशी को चित्रण कार्य करते देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ। तब उन्होंने गोवर्धन लाल जोशी को नाथद्वारा के प्रसिद्ध चित्रकार घासीराम जी के पास भेजा तथा उन्होंने चित्रकला का अभ्यास किया। विद्याभवन उदयपुर के निदेशक श्री डॉ. मोहन सिंह मेहता ने उनकी कला प्रतिभा को पहचाना तथा उन्हें विद्या भवन उदयपुर में कला शिक्षक रूप में नियुक्त किया तथा वह सेवा निवृत्ति तक वही कार्य करते रहे।

डॉ. मोहन सिंह मेहता ने उन्हें कला शिक्षा में पारंगतता हासिल करने हेतु एक वर्ष के लिये शान्ति निकेतन भेजा जहाँ रविन्द्रनाथ ठाकुर अवनिन्दनाथ ठाकुर, नन्दलाल वसु आदि के साथ उनकी कला में और निखार आया।

पुरस्कार – बाबा ने अनेक चित्र प्रदर्शनियाँ लगाई व अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। राजस्थान ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष रहे तथा उन्हें कलाविद की उपाधि से विभूषित किया।

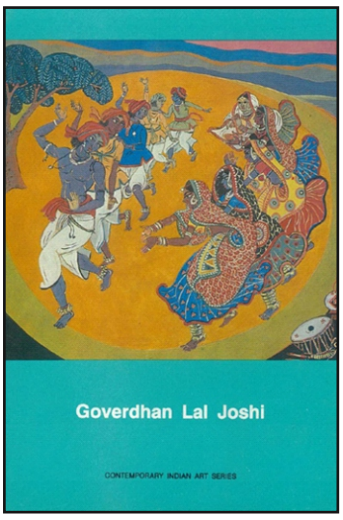

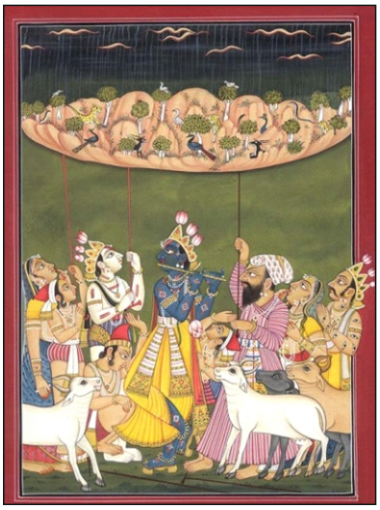

प्रमुख चित्र – बाबा के प्रमुख चित्रों में गणगौर की सवारी, जौहर की ज्वाला, कला की भावी, श्रम और विश्राम, हर्ष का त्यौंहार, सबसे महत्व पूर्ण उन्होंने भील जीवन के अनेक पक्षों का चित्रण किया तथा उन्हीं से बाबा को एक नई पहचान मिली।

देवकीनन्दन शर्मा

देवकीनन्दन शर्मा का जन्म सन् 1919 में अलवर जिले में हुआ था। इनकी कला शिक्षा महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स जयपुर में श्री शैलेन्द्रनाथ डे के निर्देशन में हुयी तथा शान्ति निकेतन कलकत्ता में श्री नन्दलाल बोस के मार्ग दर्शन के फ्रेस्को चित्रण का अध्ययन किया। देवकीनन्दन शर्मा वनस्थली विद्यापीठ में चित्रकला के प्रोफेसर व अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुये सेवानिवृत हुये।

श्री शर्मा ने परम्परागत चित्रण, वॉश पद्धति, फ्रेस्को व टेम्परा पद्धति में विशेषतः चित्रण किया प्रारम्भ में आपने ग्रामीण दृश्यों को बनाया। श्री देवकीनन्दन शर्मा को पक्षी चित्रकला के रूप में प्रसिद्धि मिली इन्होंने, मोर, कौए, कबूतर, बुलबुल आदि पक्षियों को बहुत ही सुन्दर चित्रण किया।

प्रमुख प्रसिद्ध चित्र – इनके प्रसिद्ध चित्रों में ढोला मारू, मोर, कौएं, गाँव, शहर, सूर्योदय, सूर्यास्त, त्यौंहार, यात्रा, बैलगाड़ी, ग्वाला कृष्ण, बाजार और विश्राम आदि हैं।

कृपाल सिंह शेखावत

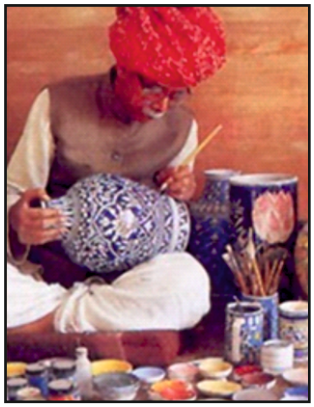

कृपाल सिंह शेखावत का जन्म 11 दिसम्बर, 1922 को सीकर जिले के मऊ गाँव में हुआ। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक कला शिक्षा पिलानी के कला प्रसिद्ध चित्रकार श्री भूर सिंह शेखावत के सानिध्य में रह कर सीखी। 1942 में उन्होंने फाइन आर्ट कॉलेज, लखनऊ में प्रवेश लिया तथा एक साल बाद ही 1943 से 1947 तक शान्ति निकेतन कोलकाता से आर्ट डिप्लोमा के प्रवेश लेकर शिक्षा ग्रहण की तथा 1948 में वे वहीं शान्ति निकेतन में ही कला शिक्षक बन गये। 1949 में उन्होंने अपने चित्रों की एकल प्रदर्शनी की।

इसी प्रकार 1950 में इन्होंने लखनऊ, इलाहाबाद, और दिल्ली में अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन एकल चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से किया इससे इनको काफी प्रसिद्धि मिली।

कृपाल सिंह शेखावत की कला को देखे तो इन्होंने विभिन्न माध्यमों में कार्य किया। इन्होंने कागज पर टैम्परा पद्धति, फ्रेस्कोम्यूरल्स, सिल्क, हाथी दाँत पर वॉश तथा जल रंगों में कलाकृतियाँ रची।

प्रसिद्ध चित्र – कृपाल सिंह शेखावत के प्रसिद्ध चित्रों में मैरिज ऑफ पाबूजी राठ़ौड़, भरत कैरींग रामाज़ सैंडिल्स, मीरां का जन्म, मीरा विवाह, राठौड़ ऑन हॉर्स बैक रामदेव जी, गोगाजी चौहान, हड़बूजी सांखला, रतन–राणा, केसर कलमी फ्लाइंग विद पाबूजी राठौड़, इनकी प्रमुख कृतियाँ थी।

कृपाल सिंह राठौड़ का महत्वपूर्ण योगदान ब्लू पोटरी के विकास में रहा जयपुर की ब्लू पोटरी तकनीक को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान श्री कृपाल सिंह शेखावत के कारण ही बनी।

पुरस्कार – हस्तशिल्प के क्षेत्र में आपके प्रयासों के कारण 1967 में राष्ट्रपति पुरस्कार दिया गया। वर्ल्ड क्राफ्ट्स कौंसिल न्यूयॉर्क ने विश्व के सबसे प्रतिष्ठित 10 शिल्पियों में से एक मानते हुये 1974 में टोरन्टों में सम्मानित किया तथा 1974 में कला उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिये भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म श्री' की उपाधी से सम्मानित किया।

परमानन्द चौयल

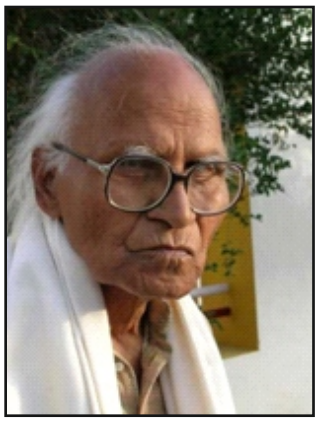

परमानन्द चौयल का जन्म 5 जनवरी 1924 को कोटा राजस्थान में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद 1948 में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर से डिप्लोमा किया तथा उच्च अध्ययन के लिये जयपुर से वह जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट मुम्बई चले गये; तत्पश्चात कला के विशेष अध्ययन के लिये 1961–62 में वह लन्दन के स्लेड स्कूल ऑफ फाइन आर्ट में प्रवेश लेकर कला की उच्चता की शिक्षा ग्रहण की।

वहां से शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप राजकीय महाविद्यालय कोटा में प्राध्यापक पद पर कार्य किया। इसके बाद सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के कला विभाग को सम्भाला तथा अन्त तक वहीं कार्य करते हुये सेवानिवृत हुये।

श्री चोयल ने अपने आस–पास के वातावरण को यथार्थ रूप में चित्रित करने का प्रयास किया तथा तेल रंगों को जल रंगों की भांति प्रयोग कर सुन्दर दृश्य चित्र बनायें। आपको आपके ''भैस'' विषय आधारित चित्रों के कारण विशेष पहचान मिली।

प्रमुख चित्र – चौयल की प्रमुख कृतियों में 'मेरी गली के आस–पास', भैंस, चित्तौडगढ़, दो नारियां, कश्मीर का दृश्य, लन्दन में बारात, डूबता अतीत, आशा के मेघ, खिड़की, माँ एवं शिशु विख्यात रही है।

पुरस्कार – चौयल को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अनेक बार पुरस्कृत किया गया। 1983 में ऑल इण्डिया फाइन आर्ट एवं क्राफ्ट सोसायटी (।प्थ।है) द्वारा सम्मानित किया गया। 1980 में द इण्डियन अकादमी

ऑफ आर्ट्स अमृतसर द्वारा पुरस्कृत किया। तथा 1981 से 1983 तक राजस्थान ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष रहे। 1981 में राजस्थान ललित कला द्वारा कलाविद् की उपाधी से सम्मानित किया गया।

राम जैसवाल

राम जैसवाल का जन्म 5 सितम्बर 1937 को उत्तर प्रदेश में मथुरा जनपद के शाहाबाद गाँव में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात लखनऊ के कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट से डिप्लोमा लिया। श्री जैसवाल ने कॉलेज में अध्ययन के दौरान काफी प्रसिद्धि एवं पुरस्कार प्राप्त किये।

डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात वे लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में कलाकार के पद पर तीन वर्ष कार्य करते रहे। इसके पश्चात आप ''मेरठ कॉलेज'' में प्राध्यापक रहे। पर थोड़े समय पश्चात ही आप अजमेर के दयानन्द महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर नियुक्त होकर सेवानिवृत्ति तक यहीं कार्य करते रहे। श्री जैसवाल ने बंगाल स्कूल की वाश तकनीक, जल रंग, तैल रंग एवं टेम्परा में अनेक चित्रों का निर्माण किया। तथा चित्रों के विषयों में भी आपने विविधता रखी। समाज की विसंगतियों पर भी आपने अनेक चित्र बनाएं जो व्यंगता को दर्शाते हैं।

प्रमुख चित्रों – राम जैसवाल के प्रमुख चित्रों में दूसरी ईद, शिव, वर्षा, पूजा का दिन, आंगन में दोपहरी स्ट्रीट सिगर्स, प्रणय, आषाढ़ का प्रथम दिन, युक्लिप्टस, विरहणी, हवाएं, पुष्कर आदि प्रमुख है।

साहित्य – राम जैसवाल उच्च कोटी के चित्रकार के साथ साथ कवि व साहित्यकार भी हैं। उनका काव्य संग्रह, ''बिम्ब प्रतिबिम्ब'' कहानी संग्रह ''असुरक्षित, उग्रह, समय दंश तथा विषजल'' आदि प्रकाशित हुये।

पुरस्कार एवं सम्मान – राम जैसवाल को ललित कला परिषद् लखनऊ द्वारा सन् 1955,56, 58 में वार्षिक पुरस्कार, राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा सन, 1968, 70, 71 तथा 88 में पुरस्कृत किया गया। अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता सन् 1970 में हरियाणा भाषा विभाग द्वारा प्रथम पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी ने 1974 में कहानी पुरस्कार तथा 1980 में काव्य पुरस्कार प्रदान किया।

द्वारका प्रसाद शर्मा

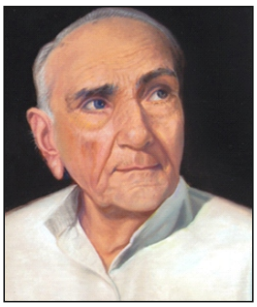

द्वारका प्रसाद शर्मा का जन्म 6 मार्च, 1922 को बीकानेर राजस्थान में हुआ। इन्होंने अपना कार्य पारम्परिक प्रारम्भिक चित्र बनाने से शुरू किया। बीकानेर में गोपाल जयपुरिया, जैसे श्रेष्ठ गुरुओं से आपने शिक्षा ग्रहण की। श्री इलाही बक्स जैसे कलाकारों से यथार्थवादी कला और व्यक्ति चित्रण की शिक्षा ली। इन्होंने केतकर कला संस्थान से कला अध्ययन की गहराईयों को सीखा तथा तेल रचना और यथार्थवादी काम कर जल रंग की पारम्परिक शैली में आपने विशेष महारत हासिल की।

पुरस्कार –राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा आपको 1958, 1959, 1960, 1961 और 1967 में राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया 1979 में द्वारका प्रसाद शर्मा जी को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा ''कलाविद्'' को सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया।

1991 में ऑल इण्डिया फर्म आर्ट एवं क्राफ्ट सोसायटी द्वारा श्री द्वारका प्रसाद जी को पुरस्कृत किया गया। 1993 में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त है राजस्थान के राज्यपाल द्वारा भी 1984 और 1995 में सम्मानित कर पुरस्कृत किया।

डॉ. विद्यासागर उपाध्याय

चित्रकार डॉ. विद्यासागर उपाध्याय का जन्म 24 नवम्बर, 1948 को बांसवाड़ा जिले के प्रतापपुर गाँव में हुआ। आपने अपना कला अध्ययन मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से 1970 में एम.ए. चित्रकला विषय में किया तथा 1997 में इसी विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधी प्राप्त की।

डॉ. उपाध्याय ने अपने कला अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात स्कूल शिक्षा में कला अध्यापन का कार्य किया। कुछ समय बाद ही आप राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर में चित्रकला के प्राध्यापक नियुक्त हुये। तथा अन्त में इसी संस्थान के प्राचार्य पद से आप सेवा निवृत्त हुये।

संस्थान में कार्य करते हुये आपने अपना मौलिक सृजन कर इस क्षेत्र में अपनी विशिष्ठ पहचान बनाई।

प्रमुख चित्र –विद्यासागर उपाध्याय की कला को हम दो पक्षों में बांट सकते हैं जिसमें पहला पक्ष उनके चित्रों में काले रंग का प्रयोग या श्वेत–श्याम चित्र। दूसरा पक्ष उनके शीर्षक विहीन चित्र जो दर्शक को अपनी और आकर्षित करते हैं।

इन्होंने अपने चित्रों में सदैव नवीन आकारों को जन्म दिया जिनमें तंत्र, ज्यामिति प्रकृति को संजोया है इसी के साथ आपने बादलों, पर्वतों, गोल पत्थरों, वृक्षों और जल की

तरंगों का चित्रण बहुत श्रेष्ठता से किया है।

पुरस्कार –डॉ. विद्यासागर उपाध्याय को अनेक पुरस्कार मिले हैं जिनमें प्रमुख हैं –राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर द्वारा आपको सन् 1969, 1972, 1975, 1978, 1980, 1982, 1984 में राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा इसी के साथ 1991 में अखिल भारतीय कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा 1985 में पुरस्कृत किया गया तथा उत्तरप्रदेश राज्य अकादमी द्वारा 1988 में तथा राजस्थान सरकार द्वारा 1991 में पुरस्कृत व सम्मानित किया गया।

किरण मुर्डिया

चित्रकार किरण मुर्डिया का जन्म 1951 में राजस्थान के उदयपुर शहर में हुआ था। इन्हे बचपन से प्राकृतिक दृश्यों को बनाने का शौक था अतः इनके माता पिता नें किरण को कला शिक्षा देने का मन बचपन में ही बना लिया था।

किरण ने 1972 में सुखाडियाँ विश्व विद्यालय उदयपुर से एम. ए. किया। आपने स्वतन्त्र चित्रण के साथ ही आपने मीराँ कन्या महाविद्यालय उदयपुर में चित्रकला विषय की प्राध्यापक के रूप में कार्य किया।

चित्रों के विषय– किरण मुर्डिया के चित्रों के विषय अपने आस पास के वातावरण, झील, पर्वत, झरने, हवेलियाँ, झरोखे, बावडी, रही है। आपने माउन्ट आबू की प्राकृतिक दृश्यों से प्रभावित हो कर अनेक चित्र बनाये है। जिसमें झरना, बाग, पेड़, पहाड़ी, घाटी, सर्पाकार घाटी, सर्पीले रास्ते प्रमुख है।

पुरस्कार – किरण मुर्डिया को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा सत्र 1974, 1980, 1986, में राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा 1987 में ललित कला अकादमी जयपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त किया।

इसके साथ ही किरण मुर्डिया केन्द्रीय ललित कला अकादमी नयी दिल्ली, ऑल इण्डिया फाइन ऑर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसायटी नई दिल्ली द्वारा आयोजित चित्र प्रदर्शनियों में अपनी भागीदारी निभाई तथा भारत के अनेक राज्यों में अपने एकल चित्रों की चित्र प्रदर्शियॉ कर चुकी है।

महत्वपूर्ण बिन्दू–

1. रामगोपाल विजयवर्गीय के चित्रों में तीखे नाक नक्श, लहराते अंग–प्रत्यंग, पारदर्शी वस्त्रों मे कोमल शारीरिक सौन्दर्य, लचीली रैखांकल तथा अद्वितीय धुमिल रंग योजना इनके चित्रों की विशेषता है।

2. भवानी चरण गुई वाश तकनीक के श्रेष्ठ कलाकार थे उनके प्रमुख चित्रों शिव–तांडव, कालीदास, शकुन्तला, राधाकृष्ण, सरस्वती, कालिया मर्दन आदि है।
3. गोवर्धन लाला जोशी (बाबा) के प्रमुख चित्रों मे गणगौर की सवारी, जौहर ज्वाला, श्रम और विश्राम, हर्ष का त्यौहार आदि है इन्होंने भीलों के जनजीवन के अनेक पक्षों का चित्रण किया है।
4. देवकीनन्दन शर्मा ने वाश पद्धति, फ्रेस्को व टेम्परा पद्धति में विशेषतः चित्रण किया है यह एक श्रेष्ट पक्षी चित्रकार के रूप मे जाने जाते है।
5. कृपाल सिंह शैखावत का महत्वपूर्ण योगदान ब्लू पोटरी के विकास मे रहा है इन्होंने जयपुर की ब्लू पोटरी की तकनीक को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पहचान दिलवाई है।
6. परमानन्द चोयल कोटा मे जन्मे व सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर के कला विभाग मे सेवानिवृति तक अपना योगदान दिया आपको 'भैस' विषय आधारित चित्रों से विशेष पहचान मिली है।
7. रामजैसवाल दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के चित्रकला विषय मे विभागाध्यक्ष रहे तथा यही से सेवानिवृत्त हुए वे वाश तकनीक, जलरंग, टेम्परा व तेल रंग के श्रेष्ठ कलाकार है। समाज की विसंगतियों पर भी आपने अनेक चित्र बनायें हैं।
8. विद्यासागर उपाध्याय की कला को दो पक्षो बांटा गया है एक पक्ष श्वेत–श्याम चित्र व दूसरा शीर्षक विहिन चित्र जो दर्शक को अपनी और आकर्षित करते है।
9. किरम मुर्डिया ने अपने आसपास के वातावरण, झीलों, पर्वत, झरने, हवेलियां, झरोखे, बावड़ी, आदि को बड़ी श्रेष्ठता से बनाये है।

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न–

1. श्री रामगोपाल विजयवर्गीय को भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' की उपाधि से किस सन् मे अलंकृत किया गया है–

(अ) 1984 (ब) 1934

(स) 1988 (द) 1990

2. बी. सी. गुई का जन्म किस परिवार मे हुआ है–
(अ) गुजराती (ब) राजस्थानी (स) बंगाली (द) पंजाबी

3. गोवर्धन लाला जोशी का जन्म किस ग्राम मे हुआ–
(अ) नाथद्वारा (ब) राजसमन्द (स) उदयपुर (द) काकरोली

4. देव की नन्दन शर्मा को किस चित्रकार के रूप में जाना जाता है–
(अ) पशु चित्रकार (ब) पक्षी चित्रकार (स) प्रकृति चित्रकार (द) मानव चित्रकार

5. ब्लू पोटरी के प्रसिद्ध चित्रकार कौनसे है–
(अ) कृपाल सिंह शैखावत (ब) परमानन्द चौयल
(स) रामजैसवाल (द) द्वारका प्रसाद शर्मा

अति लघुत्तरात्मक प्रश्न–

1. परमानन्द चोयल ने किस पशु का विशेष रूप से चित्रण किया है?
2. राम जैसवाल को चित्रकार के अलावा और किस रूप मे जाना जाता है?
3. द्वारका प्रसाद शर्मा ने यथार्थ वादि चित्रण किस कलाकार से सीखा?
4. डा. विद्यासागर उपाध्याय का जन्म कहां हुआ?
5. किरण मुर्डिया को बचपन मे कैसे चित्र बनाने का शौक था?

लघुरात्मक प्रश्न–

1. गोवर्धनलाल जोशी (बाबा) का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिये?
2. देवकीनन्दन शर्मा के प्रसिद्ध चित्रों के विषयों की जानकारी दीजिए?
3. परमानन्द चोयल को मिले पुरस्कारों के बारे मे बताइए?
4. द्वारका प्रसाद शर्मा का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिये?
5. किरण मुर्डिया के चित्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिये?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. रामगोपाल विजयवर्गीय के जीवन परिचय एवं कला पर लेख लिखिये?
2. कृपाल सिंह शेखावत के प्रसिद्ध चित्र एवं उनके विशिष्ट कार्यो का वर्णन कीजिये?
3. राम जैसवाल के जीवन एवं उनके चित्रो पर लेख लिखिये?
4. विद्यासागर उपाध्याय के कृतित्व एवं पुरस्कारों की विस्तृत जानकारी दीजिये?
5. भवानी चरण गुई का जीवन परिचय एवं उनके चित्रों की जानकारी दीजिये?

बहुचयनात्मक उत्तरमाला –

1. अ. 2. स 3. द 4. ब 5. अ